School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "श्रीमद्भागवत महापुराण का काव्यशास्त्रीय अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Sanskrit** and Prakrit Language under school of **Humanities** of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. **Vinod Kumar Gupta** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Manisha
En. No. 2301002

Research Supervisor
Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

Prof. Satya Pal Tiwari
Director of School of Humanities

29/07/24

Prof. P.K. Pandey
Director, R&D Cell

"श्रीमद्भागवत महापुराण का काव्यशास्त्रीय अध्ययन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN SANSKRIT AND PRAKTIR LANGUAGE

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

MANISHA

En. No. 2301002

Under the Supervision of

Prof. VINOD KUMAR GUPTA

Faculty of Sanskrit

School of Humanities

U.P. Rajarshi Tandon Open University Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

ABSTRACT

संस्कृत वाङ्मय में महर्षि बादरायण व्यास के अनुपम अवदान से सभी परिचित हैं। इनको भगवत्पाद आचार्यशंकर ने परवाक्य प्रमाणशास्त्र के मूर्धन्य आचार्य के रूप में स्वीकार किया है। इन्हीं महर्षि वेद व्यास के अष्टादश पुराणों में अन्यतम आत्मस्थानीय श्रीमद्भागवतमहापुराण लोक में प्रख्यात है।
द्वादश स्कन्धों में विभक्त यह ग्रन्थ मानव जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रतिबिम्बन करता है। इन सभी स्कन्धों का प्राणस्थानीय भागवतमहापुराण अपनी विशिष्टता से भगवद्गुणानुवाद को द्वार बनाकर अपनी महिमा में प्रतिष्ठित है।
इसी प्रकार भागवतमहापुराण में रस-विवेचन के क्रम में प्रधान रस विमर्श, अन्य अप्रधानरसों का विवेचन कर रस ध्वनि एवं भाव ध्वनि का तुलनात्मक विमर्श प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि काव्यशास्त्र के प्रतिपादन का विषय न केवल दोष और गुणों के हानोपादान का कथन होता है, अपितु काव्य के गूढ तत्व रस-ध्वनि आदि बिन्दुओं का प्रतिपादन ही मुख्य विषय है। साथ ही कलापक्ष एवं भावपक्ष दोनों का विस्तार किया जाएगा।

संस्कृत साहित्य के अनेक विधाओं पर शोध कार्य हुए हैं पुराने पर भी भिन्न-भिन्न समय में अनेक शोध शोध कार्य किए गए हैं मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य का विषय श्रीमद्भागवत महापुराण का काव्यशास्त्रीय अध्ययन सर्वथा नवीन विषय है मेरे द्वारा महापुराण के जितने स्वरूप हैं उन सभी में श्रीमद्भागवतमहापुराण को काव्य की दृष्टि से, रस की दृष्टि से, अलंकार की दृष्टि से, ध्वनि तत्व की दृष्टि से एवं छंद की दृष्टि से भी भागवतमहापुराण का अध्ययन किया जाएगा।

Keywords

काव्यशास्त्रीय अध्ययन, काव्य की दृष्टि, रस की दृष्टि, श्रीमद्भागवतमहापुराण, अलंकार, ध्वनि तत्व, छंद।

10:25

CONTENTS

	Description	Page No.
1	Introduction	5
2	Literature Review	10
3	Description Broad Area	10
4	Objectives of the Study	10
5	Research Methodology	11
6	Expected Outcome of the Research	11

References

Plagiarism Report

1. Introduction

संस्कृत वाङ्मय में महर्षि बादरायण व्यास के अनुपम अवदान से सभी परिचित हैं। इनको भगवत्पाद आचार्यशंकर ने परवाक्य प्रमाणशास्त्र के मूर्धन्य आचार्य के रूप में स्वीकार किया है। महान् दार्शनिक श्री वाचस्पति मिश्र ने इन्हें भगवान् के ज्ञानशक्ति के अवतार के रूप में स्मरण किया है। इन्हीं महर्षि वेद व्यास के अष्टादश पुराणों में अन्यतम आत्मस्थानीय श्रीमद्भागवतमहापुराण लोक में प्रख्यात है। इस ग्रन्थ के ऊपर महान् आचार्यों अपने-अपने व्याख्यानों के द्वारा दार्शनिक तत्वों का कर्म, भक्ति एवं ज्ञान इन तीनों के प्रस्थानों का सम्यक् निरूपण किया है। द्वादश स्कन्धों में विभक्त यह ग्रन्थ मानव जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रतिबिम्बन करता है। इन सभी स्कन्धों का प्राणस्थानीय भागवतमहापुराण अपनी विशिष्टता से भगवद्गुणानुवाद को द्वार बनाकर अपनी महिमा में प्रतिष्ठित है। स्वयं महान भगवद्भक्त राजर्षि परीक्षित का निम्न वचन हमारे ध्यान को इस ओर आकृष्ट करता है-

अवतीर्य यदोर्वंशे भगवान्भूतभावनः।

कृतवान् यानि विश्वात्मा तानि नो वद विस्तरात्॥

काव्यशास्त्र का भी यही प्रयोजन है, जो अन्यान्य शास्त्रों का परमानन्द रूप मोक्ष के रूप में अभिवर्णित है। वेदादि प्रभुसम्मित वाक्य होने से त्वरित ग्राह्य नहीं है, किन्तु यहाँ भागवतमहापुराण पुराण होने से सुहृत्सम्मित होने पर भी कान्तासम्मित उपदेश एकत्र भगवान् जो आनन्द अन्यान्य काव्यों के निरूपण से प्रदान करने में अक्षम है, यह सुख सहज रूप से इस भगवद्गुणानुवाद शास्त्र में ओत-प्रोत है।

इन्हीं सब दृष्टियों से इस अनुपम श्रीमद्भागवतमहापुराण में कान्तासम्मित शास्त्र की दृष्टि से समीक्षणार्थ प्रयास किया गया है। जिसके सम्यक् अवबोधनार्थ अन्यान्य

संस्कृत वाङ्गमय की सहज एवं प्रभावी युक्तियों का यथावसर विवेचन इस शोध-प्रबन्ध में यथामति किया गया है। कान्तारम्मित काव्य की दृष्टि से भागवतमहापुराण के अध्ययन के लिए इस शोध प्रबन्ध का शीर्षक 'श्रीमद्भागवत महापुराण का काव्यशास्त्रीय अध्ययन' बनाया गया है। जिस प्रकार सम्पूर्ण जगत् को आलोकित करने के लिए भगवान् सूर्य प्रकट होकर हमारे बाहरी अन्धकार को नष्ट करते हैं, उसी प्रकार हमारे हृदयान्धकार को दूर करने के लिए श्रीहरि भी पुराण-विग्रह धारण करते हैं। जैसा कि पद्मपुराण में कहा गया है-

यथा सूर्यवपुर्भूत्वा प्रकाशाय चरेद्धरिः।

सर्वेषां जगतामेव हरिरालोकहेतवे।।

तथैवान्तः प्रकाशाय पुराणावयवो हरिः।

विचरेदिह भूतेषु पुराणं परम्।।

जब हम काव्य को पढ़ते हैं अथवा नाटकों को देखते हैं। चलचित्रों का अवलोकन करते हैं। तब हमारे हृदय में भावों की अनुभूति होती है। ये भाव हमारे अवचेतन मन में न जाने कितने दिनों तक कितने स्थलों तक यों ही पड़े-पड़े अपना दिन बिताया करते हैं। जब हम काव्य में इन्हीं भावों को वर्णन पढ़ते हैं अथवा नाटक में इन्हीं भावों का चित्रण देखते हैं, तब हमारे अवचेतन मानस के छिपे भाव चेतन मानस के तरंगों में हिलोरे लेने लगते हैं। ये सुप्त दशा से प्रबुद्ध दशा में आ विराजते हैं। यह बहुत दिनों तक टिके रहने के कारण साधारण भावों से भिन्न होता है। साधारण भाव आते हैं, मन में कुछ क्षणों तक अवचेतन रहते हैं और फिर गायब हो जाते हैं, परन्तु मन के अन्तराल में छिपने वाला भाव बहुत देर तक रहता है और इसी कारण वह स्थायी भाव के नाम से पुकारा जाता है। काव्य में वर्णित विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के द्वारा पुष्ट किये जाने पर यही स्थायी भाव रस के रूप में परिणत होता है। जैसा कि आचार्य भरत का

सूत्र है- विभावानुभावसंचारिसंयोगाद्- रसनिष्पत्तिः। इस प्रकार विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के द्वारा अभिव्यञ्जित होने पर स्थायीभाव ही रस के रूप में परिणत हो जाता है और अलौकिक आनन्द का जनक बनता है।

रस के स्वरूप का कथनपूर्वक इसके आस्वादन के प्रकार को आचार्य विश्वनाथ कहते हैं-

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।।
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित् प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः ॥

साहित्यदर्पण के अनुसार सर्गबन्ध महाकाव्य में धीरोदात्तगुण से युक्त देवताप्रकृतिक कोई एक नायक होना चाहिए। यह अच्छे कुल का क्षत्रिय होना चाहिए। अथवा क्षत्रियेतर जाति का उसी प्रकार का भी नायक हो सकता है। अथवा एकवंशोत्पन्न कुलीन अनेक नायक भी हो सकते हैं। यथा-

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।।' साहित्यदर्पण 3.2-3

विदर्भदेश के अधिपति महाराज भीष्मक की पुत्री ने महल में आने वाले अतिथियों से श्रीकृष्ण के सौन्दर्य, पराक्रम, गुण और वैभव की प्रशंसा सुनकर यह निश्चय किया कि श्रीकृष्ण ही मेरे अनुरूप पति हैं। श्रीकृष्ण भी समझते थे कि रुक्मिणी में बड़े सुन्दर-सुन्दर लक्षण हैं, वह परम बुद्धिमती है, उदारता सौन्दर्यशील, स्वभाव और गुणों में भी अद्वितीय है। इसलिए रुक्मिणी ही मेरे अनुरूप पत्नी है। अतः श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी से विवाह करने का निश्चय किया।

वृन्दावनविहारी श्रीकृष्ण की प्रियतमा, सर्वश्रेष्ठ गोपी का नाम राधा है। उनके भौतिक जीवन की घटनाएँ नितान्त स्वल्प रूप में भागवत में वर्णित है। ये वृन्दावन के समीपस्थ बरसाने के आभीरपति वृषभानु नामक गोप की कन्या थीं। उनकी माता का नाम कीर्तिदा था। राधा का जन्म भाद्रपद शुक्ल अष्टमी चन्द्रवार को हुआ था। श्रीकृष्ण की बाललीलाओं में भी श्रीराधा का अपूर्व योगदान था, परन्तु उनकी पूर्णाहुति हुई महारास में, जहाँ राधा का प्रथम मिलन, तदनन्तर विच्छेद अनन्तर पुनर्मिलन सम्पन्न हुआ था। यह प्रसङ्ग भागवत में रासपञ्चाध्यायी के नाम से जाना जाता है।

अलङ्कारवादी आचार्यों की दृष्टि काव्य में अलङ्कार को विशेष महत्व देती है। ये अलङ्कार को काव्य का नितान्त आवश्यक शोभावर्धक साधन मानते हैं, जिनकी उपस्थिति काव्य में नितान्त आवश्यक होती है। उनकी दृष्टि में जिस प्रकार उष्णता से रहित अग्नि की कल्पना असम्भव है, वैसे ही अलङ्कार के बिना काव्य की सता निराधार है।

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती।

असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलङ्कृती ॥

मम्मटाचार्य के अनुसार गुण के लक्ष्य में रसोकर्षकत्व तथा रसनिष्ठत्व ये दो धर्म समाविष्ट हो जाते हैं। इसलिए गुण के निम्न दो लक्षण बनते हैं-

1. रसोत्कर्षकत्वे सति रसाव्यभिचारित्वम्।

2. अव्यभिचारेण रसोपकारकत्वं गुणत्वम्

पुराणों में भागवत पुराण का स्थान एवं महत्व को प्रदर्शित करने के लिए अष्टादश पुराणों का परिचय, कृष्ण द्वैपायन का परिचय बतला कर भागवत पुराण को परिचय के माध्यम से भागवतमहापुराण का विषय वस्तु प्रतिपादित किया गया है। इस

सन्दर्भ में काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय उपस्थापित किया गया है, जिससे काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का दिग्दर्शन भागवतमहापुराण में कराया जा सके।

इसी प्रकार भागवतमहापुराण में रस-विवेचन के क्रम में प्रधान रस विमर्श, अन्य अप्रधानरसों का विवेचन कर रस ध्वनि एवं भाव ध्वनि का तुलनात्मक विमर्श प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि काव्यशास्त्र के प्रतिपादन का विषय न केवल दोष और गुणों के हानोपादान का कथन होता है, अपितु काव्य के गूढ तत्व रस-ध्वनि आदि बिन्दुओं का प्रतिपादन ही मुख्य विषय है। साथ ही कलापक्ष एवं भावपक्ष दोनों का विस्तार किया जाएगा।

भागवतमहापुराण नायकादि के विवेचन क्रम में प्रधान नायक एवं उसकी प्रकृति के विचार में बतलाया जायेगा कि भागवतमहापुराण के नायक भगवान् श्रीकृष्ण हैं, जिनकी प्रकृति दिव्यादिव्य मानी जा सकती है। इसी प्रकार प्रधान नायिका का निर्धारण तो अतिजटिल होते हुए श्रीकृष्ण की स्वीया नायिका रुक्मिणी है, जो कि प्रधान नायिका है, उनकी भी दिव्यादिव्य प्रकृति कही जा सकती है। अन्य पात्रों प्रतिनायक स्वरूप कंस, जरासन्ध, शिशुपाल आदि पात्र हैं, जिनके स्वरूप विवेचना से नायक के उत्कर्षाधान में सहायता मिलती है।

भागवतमहापुराण में अलङ्कारों के विवेचन क्रम में शब्दालंकार अर्थालङ्कार तथा अलङ्कार ध्वनि का विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा। एक महाकाव्य की तरह भागवतमहापुराण में अलङ्कार का मञ्जुल प्रयोग हुआ है। साथ ही स्थान-स्थान पर अलंकार ध्वनि का सद्भाव भी दृष्टिगोचर होता है।

भागवतमहापुराण में काव्य के गुण, दोष एवं रीति का विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। भागवत महापुराण में प्रसङ्गानुसार जगह-जगह माधुर्य ओज तथा प्रसाद गुण काव्य की शोभा को बढ़ा रहे हैं। एक ओर जहाँ माधुर्य गुण के कारण चित पिघला सा

बन जाता है, यहीं ओज गुण के कारण चित्त का विस्तार हो जा रहा है, तो प्रसाद गुण के कारण पद्यों के समझने में पाठक को किसी प्रकार बुद्धि को कष्ट देने की जरूरत नहीं होती।

भागवतमहापुराण के काव्य शास्त्रीय अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भागवतमहापुराण रस तथा माधुर्य का अगाध स्रोत है। इसमें हृदय पक्ष का प्राधान्य होने पर भी कला पक्ष का अभाव नहीं है। इसकी कविता में अद्भुत चमत्कार है, जो सैकड़ों हजारों वर्षों से सहृदय पाठकों को अपनी शब्दमाधुरी तथा अर्थचातुरी से हठात् आकृष्ट करता आ रहा है।

2. Literature Review

शोधार्थिनी द्वारा प्रकृति शोध विषय से संबंधित अन्य किसी भी प्रकार की शोध कार्य विभिन्न ऑनलाइन पटलों एवं अंतर्जाली माध्यमों के द्वारा खोजे जाने पर दृष्टि में इस तरह का कार्य संज्ञान में नहीं आया है। अतः श्रीमद् भागवत महापुराण का काव्य शास्त्रीय अध्ययन यह विषय सर्वथा ऐसा नवीन है।

3. Description Broad Area

प्रस्तुत शोध शीर्षक से ही यह ज्ञात होता है कि इसमें भागवत महापुराण का अध्ययन करना निश्चित है। इसमें श्रीमद् भागवत महापुराण के प्रथम स्कंध से लेकर के दशम स्कंध तक में वर्णित तथ्यों का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाएगा।

4. Objectives of the Study

संस्कृत साहित्य के अनेक विधाओं पर शोध कार्य हुए हैं पुराने पर भी भिन्न-भिन्न समय में अनेक शोध शोध कार्य किए गए हैं मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य का विषय श्रीमद्भागवत महापुराण का काव्यशास्त्रीय अध्ययन सर्वथा नवीन विषय है मेरे द्वारा महापुराण के जितने स्वरूप हैं उन सभी में भागवत महापुराण का काव्यशास्त्र की दृष्टि से चिंतन किया जाएगा-

1. श्रीमद्भागवतमहापुराण को काव्य की दृष्टि से अध्ययन किया जाएगा
2. श्रीमद्भागवतमहापुराण का अध्ययन रस की दृष्टि से किया जाएगा
3. अलंकार की दृष्टि से भागवतमहापुराण का अध्ययन होगा
4. ध्वनि तत्व की दृष्टि से भागवतमहापुराण का अध्ययन किया जाएगा
5. छंद की दृष्टि से भी भागवतमहापुराण का अध्ययन किया जाएगा

5. Research Methodology

अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रस्तुत शोध में अन्वेषणात्मक वर्णनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जायेगा। अन्वेषणात्मक शोध अध्ययन विषय के बारे में नये विचार व अन्तर्दृष्टि को उद्घाटित करने शोध विषय से सम्बन्धित ज्ञान का विस्तार करता है। शोध विषय से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के बारे में उपलब्ध साहित्य के पुनरावलोकन द्वारा अधिक विस्तृत सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।

श्रीमद्भागवतमहापुराण का काव्य शास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में यह अध्ययन अपेक्षाकृत नया है और विषय से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों को उजागर करने वाला है। इसीलिए प्रस्तुत शोध में अन्वेषणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग अपेक्षित है।

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग करना भी उपयुक्त है: क्योंकि यह शोध श्रीमद्भागवत महापुराण का काव्य शास्त्रीय अध्ययन काव्यशास्त्रीय तत्वों से सम्बन्धित विभिन्न कारकों का गहन विश्लेषण करने का प्रयास है।

6. Expected Outcome of the Research

प्रस्तुत शोध कार्य भागवत महापुराण से संबंधित है इसमें श्रीमद् भागवत महापुराण के अनेक पक्षों का उद्घाटन किया जाएगा प्रस्तुत शोध कार्य में भागवत महापुराण से संबंधित अनेक मौलिकताओं एवं विशिष्टताओं को विद्वत्समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा जो निश्चित रूप से सुधी जनों के लिए सार्थक सिद्ध होगा ऐसा मुझे विश्वास है। श्रीमद् भागवत महापुराण में भगवान् श्री कृष्ण के चरित्र का सांगोपांग

वर्णन किया गया है अतः इस महापुराण में रसों का वर्णन अलंकारों की सार्थकता एवं ध्वनि तत्वों का निरूपण तथा छंद विधान का प्रतिपादन किया गया है इन तथ्यों से संस्कृत जगत एवं श्रीमद् भागवत महापुराण के प्रेमियों को परिचय प्राप्त होगा।

अध्याय विभाजन

भूमिका

प्रथम अध्याय - श्रीमद्भागवत महापुराण के कर्ता एवं विषय-वस्तु

द्वितीय अध्याय - संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा

तृतीय अध्याय - श्रीमद्भागवत महापुराण में रस तत्त्व

चतुर्थ अध्याय - श्रीमद्भागवत महापुराण में अलंकार तत्त्व

पंचम अध्याय - श्रीमद्भागवत महापुराण में ध्वनि आदि तत्त्व

उपसंहार

References

1- अथर्ववेद शंकर पाण्डुरंग पण्डित द्वारा सम्पादित सायण भाष्य संहिता, मुम्बई।

2- अष्टादशपुराण दर्पण ज्वाला प्रसाद, मिश्र कृत, वैंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई।

3- कठोपनिषद् - डॉ बलवान सिंह यादव, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी।

4- ईशादिपंचोपनिषद् अन्तर्गत शांकर भाष्य, गिरिगोपालयतीन्द्र कृत, टीकाद्वय सहित।

5-. गरुड़ पुराण आचार्य पंचानन द्वारा सम्पादित, बंगवासी, प्रेस कलकत्ता, सं० १३१४।

6- नारदीय पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर।

7- पद्मपुराण, संस्कृत संस्करण, वैंक्टेश्वर प्रेस, मुम्बई।

8- भक्ति रसायन गीता प्रेस, गोरखपुर।

9- भविष्य पुराण वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, सन् १९१० ई०।

10- भागवत पुराण गीता प्रेस, गोरखपुर।

11- भागवतपुराण, चौखम्भा संस्कृत भवन वाराणसी।

12- मत्स्य पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर।

13- मनुस्मृति, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी।

14- महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर।

15- मार्कण्डेय पुराण- मूल संस्करण, आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज पूना।

16- पुराणविमर्श आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी

17- संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी।

DrillBit

RBit Similarity Report

0	0	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

CATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE